



GROW WITH INDIA INVEST WITH KEDIA

4 जून से देश में होगी
स्वर्णिम युग की शुरुआत
**10 लाख तक
बढ़ेगी कीमत
केडिया देगा इतिहास !**

इस ऐतिहासिक दिन पर केडिया अपने सभी प्रोजेक्ट्स में एक साथ
कीमतों में 10 लाख तक की वृद्धि करके एक नया कीर्तिमान स्थापित
करेगा। इस सुनहरे भविष्य का हिस्सा बनिए केडिया के साथ !





THOSE MESMERISING EYES AND BEAUTIFUL LIPS

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

She was called 'the unkissed girl,' Errol Flynn wanted to kiss her. She refused.

Dangerous Second-Hand Vapour

OF PAIN, POETRY & PERSISTENCE

During a recent session of Qissewale in Jaipur, poet Rithvik Singh Rathore shed light on the profound link between pain and poetry



ऐतिहासिक वृत्तांतों में, अब विनुपत हो चुके कैलिफोर्निया प्रिजली भातुओं को अक्सर, ऐसे विशालकाय व खुन के व्यासे जंगली जानवरों की तरह दर्शाया जाता था, जो हमेशा मनव्य व मवेशियों पर हमला करने को तयर रहते थे। लेकिन, वैज्ञानिकों का कहना है कि, वास्तविकता शायद इन्हीं नाटकीय नहीं थी। प्रोस्ट्रॉडिंग्स ऑफ द रोयल सासाइटी जर्नल में प्रकाशित एक पेपर के अनुसार, प्रिजली भातू अधिकतर वैज्ञानिक डाइट खाते थे और जिनना बताया जाता है, उससे साइज में कफी छोटे थे। एक समय कैलिफोर्निया में बड़ी सख्ती में पाए जाने वाले प्रिजली भातू उस समय संकेत में आये जब यूरोप और फिर अमेरिका से लोग अक्सर भातुओं का शिकार करते और इन्हें ट्रैप करते थे। क्योंकि उन्हें डर था कि, भातू उनके मवेशियों को खा जाएगो। समय के साथ, इन्हाँनी गतिविधियों के कारण, कैलिफोर्निया प्रिजली भातुओं की आवादी में भारी कमी आ गई। अखिली बार कैलिफोर्निया प्रिजली भातू सौं साल पहले, वर्ष 1924 में नजर आया था और उसके कुछ समय बाद ये पूरी तरह गायब हो गए। शोधकार्ता इन भातुओं की वितुती के कारणों के साथ-साथ इनके व्यवहार, साहज और डाइट के बारे में जानना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने अभिलेखीय दस्तावेजों के साथ-साथ नैचुरल हिस्ट्री कैलेक्शन के प्रिजली नूनों का अध्ययन किया। भातुओं के शरीर के आकार का अंदाज लगाने के लिए इनकी खोपी और दांतों को नापा तथा रसायनिक तत्वों का पता लगाने के लिए इनकी हाइड्रोयों व खाल का विशेषण किया। रसायनिक अध्ययन से वैज्ञानिक भातुओं की डाइट के बारे में पता लगाना चाहते थे। अध्ययन में सामने आये थे कि, उस पहले के मवेशियों पर यूनियन भातू का आज आज भातूओं की तरह नहीं है। इसके लिए उन्होंने 2000 पाउण्ड से बढ़कर महज 400 पाउण्ड के थे, जो उस समय के वृत्तान्तों के 200 पाउण्ड से बढ़कर महज है। साथ ही, इनकी हाइड्रोयों व खाल की रसायनिक जांच से सामने आया कि, ये जानवर, 1542 में यूरोपियन्स के आने से पहले व बाद में, मुख्य रूप से पोथी खाते थे। यह बात भी उस धारणा के विपरीत है कि, सौं साल पहले कैलिफोर्निया प्रिजली भातू भयावह और मांसधारी थीं।

अपना मुस्लिम वोट बैंक खिसकता देख ममता बनर्जी बौखलायीं

ममता बनर्जी ने संदेशखाली प्रकरण को भाजपा द्वारा रचित व प्रस्तुत नाटिका बताया

-अंजन रॉय-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 मई। हात तपक से घिरी हुई, तुण्डल कोंसेस सुप्रीमो ममता बनर्जी ने अब तुनावी लाख उठाने के लिए "खैदिल" गढ़ने शुरू कर दिए हैं वे आपेल लगाए हीं कि, संदेशखाली में हुई संपूर्ण घटनाएं, सब द्वाका थीं, जिन्हें सोच समझकर रखा गया था।

एक बार फिर, अचानक ही राज भवन की एक महिला कर्मचारी ने आपेल लगाए हीं कि, राज्यपाल सी.सी.आर. आनंद बोस ने उसका बौद्धि किया है। राज्यपाल की एक टीम शीरिया के बिना समय गंवाए आरोपों की जाँच करने एग राजभवन पूर्छ गई।

महाला कर्मचारी ने दावा किया कि, उसे राज्यपाल के बिना घटना के अनुसार घटी थीं। उसने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लोगों की शिकायत कर रही हैं।

ममता बनर्जी ने अब दावा किया है कि, संदेशखाली की संपूर्ण घटना भाजपा द्वारा लिखी गयी पटकथा के अनुसार घटी थीं। उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लोगों की शिकायत कर रही हैं। उन्होंने चुनाव तरफदारी कर रहे हैं।

ममता बनर्जी ने अब दावा किया है कि, संदेशखाली की संपूर्ण घटना भाजपा द्वारा लिखी गयी पटकथा के अनुसार घटी थीं। उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लोगों की शिकायत कर रही हैं। उन्होंने चुनाव तरफदारी कर रहे हैं।

ममता बनर्जी ने अब दावा किया है कि, संदेशखाली की संपूर्ण घटना भाजपा द्वारा लिखी गयी पटकथा के अनुसार घटी थीं। उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लोगों की शिकायत कर रही हैं। उन्होंने चुनाव तरफदारी कर रहे हैं।

ममता बनर्जी ने अब दावा किया है कि, संदेशखाली की संपूर्ण घटना भाजपा द्वारा लिखी गयी पटकथा के अनुसार घटी थीं। उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लोगों की शिकायत कर रही हैं। उन्होंने चुनाव तरफदारी कर रहे हैं।

ममता बनर्जी ने अब दावा किया है कि, संदेशखाली की संपूर्ण घटना भाजपा द्वारा लिखी गयी पटकथा के अनुसार घटी थीं। उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लोगों की शिकायत कर रही हैं। उन्होंने चुनाव तरफदारी कर रहे हैं।

- और अब अचानक ही राजभवन में कार्यरत महिला कर्मचारी ने राज्यपाल अनंद बोस पर यौन उत्पीड़न का मामला दर्ज कराया।
- तथा आनन्-फानन में पुलिस की एक ठीम तत्परता से राजभवन पूर्चं गई, यौन उत्पीड़न के मामले की तहकीकात करने।
- राज्यपाल की शायद गलती यह थी कि, उन्होंने संदेशखाली व अन्य स्थानों पर चुनाव क्षेत्र की यात्रा की और जमीनी हालत की जानकारी लेने का प्रयास किया।

ममता बनर्जी ने अब दावा किया है कि, संदेशखाली की संपूर्ण घटना भाजपा द्वारा लिखी गयी पटकथा के अनुसार घटी थीं। उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लोगों की शिकायत कर रही हैं। उन्होंने चुनाव तरफदारी कर रहे हैं।

ममता बनर्जी ने अब दावा किया है कि, संदेशखाली की संपूर्ण घटना भाजपा द्वारा लिखी गयी पटकथा के अनुसार घटी थीं। उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लोगों की शिकायत कर रही हैं। उन्होंने चुनाव तरफदारी कर रहे हैं।

ममता बनर्जी ने अब दावा किया है कि, संदेशखाली की संपूर्ण घटना भाजपा द्वारा लिखी गयी पटकथा के अनुसार घटी थीं। उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लोगों की शिकायत कर रही हैं। उन्होंने चुनाव तरफदारी कर रहे हैं।

ममता बनर्जी ने अब दावा किया है कि, संदेशखाली की संपूर्ण घटना भाजपा द्वारा लिखी गयी पटकथा के अनुसार घटी थीं। उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लोगों की शिकायत कर रही हैं। उन्होंने चुनाव तरफदारी कर रहे हैं।

ममता बनर्जी ने अब दावा किया है कि, संदेशखाली की संपूर्ण घटना भाजपा द्वारा लिखी गयी पटकथा के अनुसार घटी थीं। उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के इकान किया है कि, इस थेटे में उन्होंने इस बात से रही हैं और भविष्य की संभावनाओं के पार्टी के लोगों को कोई गलत काम किया है। उनका कहना है कि, भाजपा के लो

#E-CIGARETTES

Dangerous Second-Hand Vapour

Children, who were exposed to e-cigarette second-hand vapour, showed significantly higher levels of metabolites, linked to chemicals found in e-cigarette liquids compared to their unexposed peers.



Children, living in households where e-cigarettes are used, are unintentionally inhaling substances that could harm their developing bodies, according to a new study. The research sheds light on the often-overlooked danger of second-hand e-cigarette vapour.

For years, electronic cigarettes have been marketed as a safer alternative to traditional smoking. But as these devices gain popularity among adults, there is growing concern over the unintended consequences for children exposed to the exhaled vapour.

The study implemented a unique approach to data collection, that combined the traditional use of blood tests with less invasive saliva and exhaled breath tests, to determine the exposure of children to hazardous substances.

The results were telling. Children, aged 4 to 12 years, who were exposed to e-cigarette second-hand vapour showed significantly higher levels of metabolites, linked to chemicals found in e-cigarette liquids compared to their unexposed peers.

These metabolites interfere with the body's normal operations by disrupting dopamine levels and causing inflammation and oxidative stress. Oxidative stress leads to cellular damage throughout the body and is linked to numerous diseases, including diabetes, heart disease, and cancer.

"Many people who smoke have switched to using e-cigarettes, thinking it's safer for them and others nearby," says Jeanine Rodriguez, associate professor at Emory University's School of Nursing and lead author of the study. "However, these are chemicals in the liquids used in a vape that are hazardous for you and those whom you care about, who

THOSE MESMERISING EYES AND BEAUTIFUL LIPS

She equally slipped into lead roles in films that became thumping hits. This was a time when leading ladies would never even consider a supporting character. She did this for Mehboob Khan's lavishly mounted film *Aan* (1952), which marked the debut of Nadira as the heroine in an Indianized costume drama, inspired by *The Taming of the Shrew*, which was one of the biggest lavishly mounted and expensive colour films of the time.

The script wrote that her character had to die half-way through but because the audience loved her, the director decided to lengthen her role with a song-dance number and she died much later than the script wrote. But, because she was in great demand as a 'tragedienne,' her other talents like romance, comedy, were not tapped and she became a cliché side heroine in soppy, sentimental tear-jerking characters which, however, the audience happened to love her in.



Dr. Shoma A. Chatterji
Film scholar,
journalist & author

Only the very old Hindi film buffs will remember *Nimmie* today. Though, she had earned a lot of fame for her acting in some memorable films over her long career, sadly, few seem to remember her or even her films. This is the sad story of yesterday star of 'Hindi cinema,' who just fade away from public memory as if they never existed, in real life or in films.

Nimmie was born as *Nawab Banoo* on 18th February 1932 in Agra. Her mother, Waheed Bai, was a singer and an actress, who had worked with Mehboob Khan in the 1930s. Her father, Abdul Hukm, was a military contractor, who had another family in Meerut. She went to live with her maternal grandmother after she

lost her mother, when she was only eleven years of age. When India was partitioned in 1947, her maternal grandmother moved from Abbottabad near Rawalpindi to Bombay to settle with another daughter, Dutt, who was married to G.M. Durrani, who was a music director and singer in films.

She met Raj Kapoor on the sets of Mehboob's *Andaz* at Central Studios on an invite. Raj Kapoor, then working on *Baarsi*, was on a lookout for a second lead, where Nargis was leading lady. He invited her to the sets for an impromptu audition. She said, "After giving my first shot, I saw sweets being distributed on the sets and so I asked the assistant about the reason for the celebrations. He told me that I had been selected for the role and have passed my screen test." Raj Kapoor rechristened her by changing her name from *Nawab Banoo* to *Nimmie*.

I saw her twice but only from afar and carried her lovely smile away with me when I left. The first time was on one of the floors of R.K. Studio in Colaba, where she was waiting for her call to come. I was hardly 12 at that time and though, she waved at me and flashed her charming smile, I was

too awe-struck to respond to that wave of her hand. I was meeting a film star, up close for the first time in my life.

Years later, I saw her again sitting on the beautiful circular balcony of her spacious flat in World Spice. She was the neighbour of Leela Desai and my mother and I were visiting her. As I walked on, reflex, I found this lovely lady, with those magnetic eyes, looking down at me. She smiled and like that first time, asked me, asking me to come up. I smiled but did not go up. I was a young college girl then but was scared to meet stars up front. I wish I was bolder and had listened to her. But I did not have the faintest inkling that one fine day, I would become a film journalist.

Those two small sightings of the star never quite left me, which I realized only when I read of her passing away on 25th March 2020. *World Spice* has changed today and so has the cultural matrix of the city of Mumbai, including the film fraternity. No longer can one meet the warmth that one did in those old days, when actors like Nargis, Shyama, Paro, did not

flash toothpaste smiles at fans like they do today. She was very petite, had large, very expressive eyes, a flat nose and thick lips. She was not very fair complexioned but was good at her work. In those days, beauty of the figure, that is, the physique, was more important than the face. So, the heroines had to die half-way through but because the audience loved her, the director decided to lengthen her role with a song-dance number, and she died much later than the script wrote. But, because she was in great demand as a 'tragedienne,' her other talents like romance, comedy, were not tapped and she became a cliché side heroine in soppy, sentimental tear-jerking characters which, however, the audience happened to love her in.

In *Amar and Deedar* also, she portrayed the second heroine, alongside Madhubala, in the former film and Nargis in the latter film and Dilip Kumar was the hero. She polished her acting over time and success. But in those days, heavy stylization and mannerisms in performance were the order of the day and Nimmie fit herself in that mould.

Her uniqueness lay in her ability to pull the audience even in supporting roles, when she equally slipped into lead roles in films that became thumping hits. This was a time when leading ladies would never even consider a supporting character. She did this for Mehboob Khan's lavishly mounted

Bhai (1956), *Kundan* (1955), *Mere Mehboob* (1963), *Poja Ke Phool* (1964), *Akashdeep* (1965), and *Basant Bahar* (1956). She performed a double role as mother and daughter in Sobhraj Modis *Kundan*, originally derived from *Misérables*, the famous French classic that was made into several films in different adaptations. Her realization of a school girl in uniform was quite convincing. Nimmie received the 'critics' award' for best actress for her role in *Bhai Bhai*. In many of her films, she was asked to portray the third angle of a love triangle and she loses her love to the other woman, the leading lady.

Nimmie refused two very important films that would have taken her career on a different path and would have changed her screen image of the innocent, naive, village girl, crazy in love with the hero or the villain. These two films were B.R. Chopra's *Sadma* and Raj Khosla's *Woh Kaun Thi*. She also refused *Saraswatichandra*. on K. Asif's *Love and God*, in which she was cast opposite Guru Dutt and she felt it would take her to the heights like *Mughal-e-Azam* took Mumtaz. But first Dutt died and shooting had to be stopped and K. Asif, his replacement, also passed away and the film happened many years later with Sanjeev Kumar who flopped on its face. Nimmie was no longer a part of it.

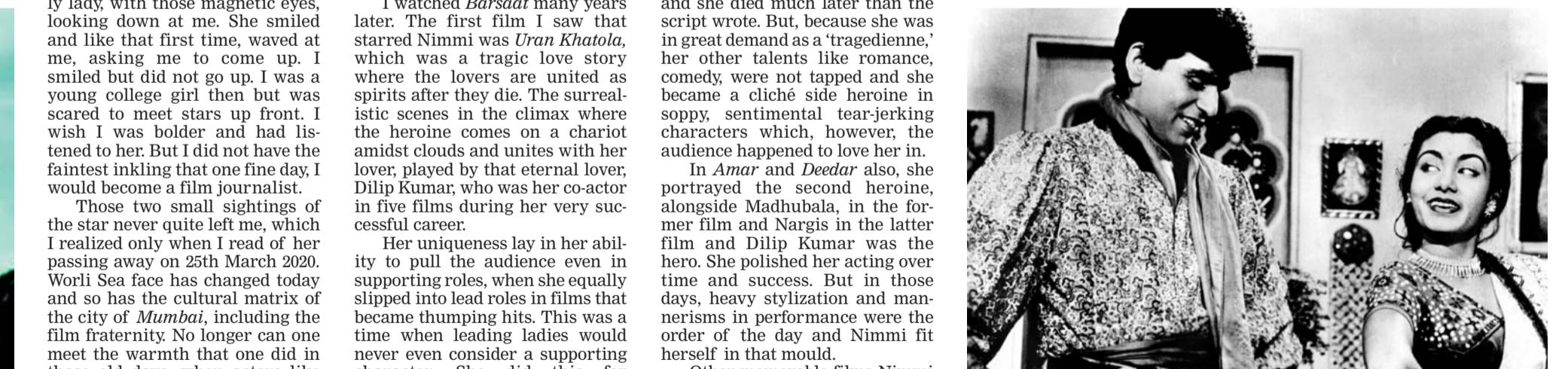
Her marriage to writer, scriptwriter, S. Ali Raza is said to have been arranged by one group while others say that it was a love marriage. Nimmie retired completely from films soon after she got married and the marriage, despite the age difference, was a happy one. But when Raza passed away in 2007, Nimmie became alone. Her only company for some time was her younger sister's son, who later migrated to England. Nimmie had brought him up when her mother died young and she took it in. But he was not beside her when she passed away. She was nicknamed 'the unkissed girl' because when the entire team of *Aan* had gone to London, Errol Flynn was charmed by her beauty and wanted to kiss her. She refused.

She confessed, when asked, that she wanted to marry and settle down. She had pinned all her hopes

rajeshsharma1049@gmail.com

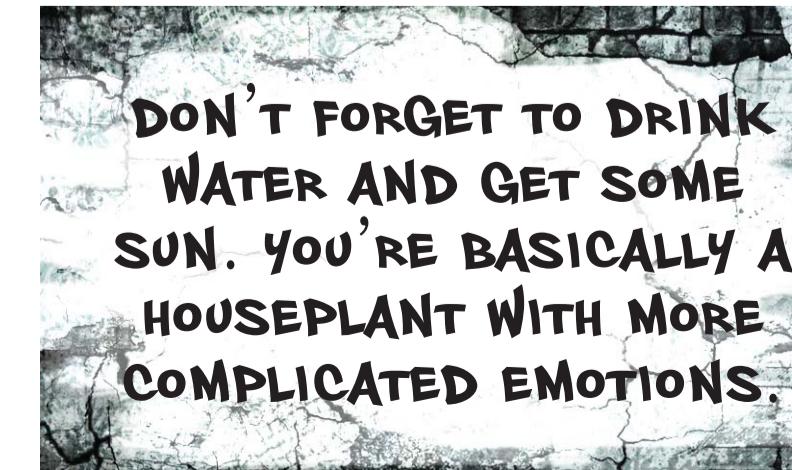


Nimmie, singing song in the movie 'Aan.'



Nimmie in 'Aan.'

THE WALL

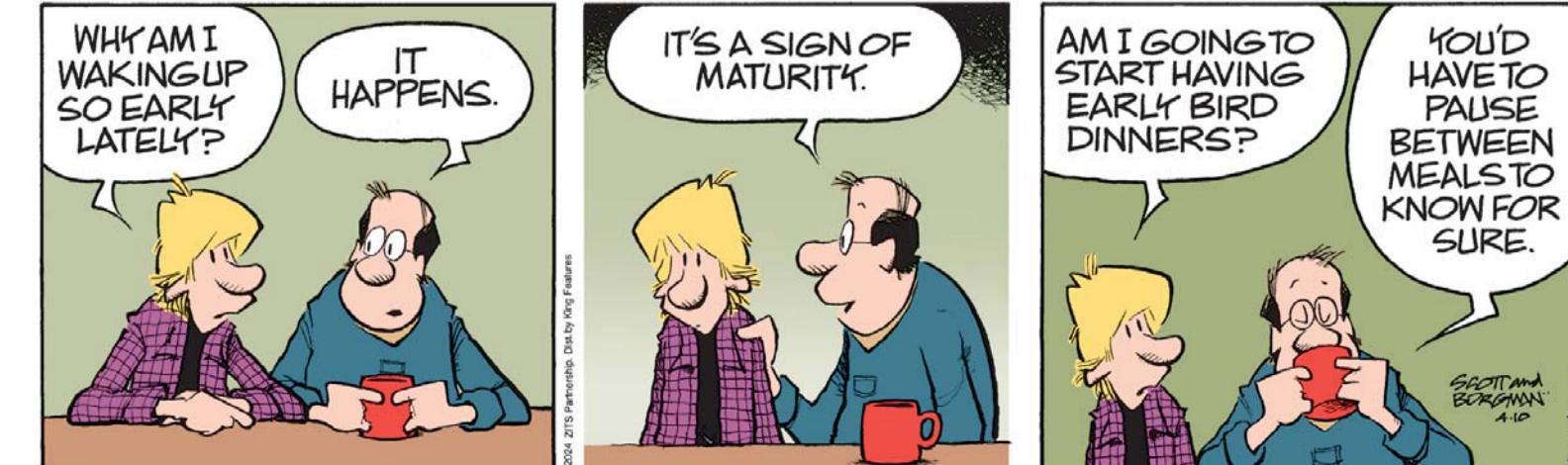


BABY BLUES



Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS



Jerry Scott & Jim Borgman

World Laughter Day

Everybody knows that laughing feels good, but few realize how valuable these simple tools can be in improving our everyday wellness and wellbeing. Laughter cannot heal or solve anything, but it can help to heal and dissolve everything. That's what *World Laughter Day* is for! It's a day where people can relieve some stress and laugh. Discover a new happiness workout and learn about what happens during *World Laughter Day*! It boosts your mood, and even lengthens your life. Watch your favourite comedy, read a funny book, or gather some friends to tell jokes and get your diaphragm working.

E

#EVENT

OF PAIN, POETRY & PERSISTENCE

During a recent session of *Qissewale* in Jaipur, poet Rithvik Singh Rathore shed light on the profound link between pain and poetry. In conversation with Radheka Kumari, he underlined the intricate interplay between personal pain and poetic expression, illustrating how his verses serve as both a mirror to his own struggles and a ray of hope for others, navigating similar emotional landscapes.



Tusharika Singh
Freelance writer
and city blogger



"My intention is not to sell, but rather to connect with those experiencing heartbreak or grief, offering solace through my poetry," says Rithvik Singh Rathore, who, with over 5 lakh readers on Instagram, is one of India's most followed writers. The poet was recently in Jaipur for a session of *Qissewale*: A series of *kahaani*, filled conversations, by *Siyaayi*, in partnership with Hyatt Regency Jaipur, Mansarovar. With a degree in English Literature from Hansraj College, Delhi, and well-versed with the nuances of classical poetry, Rithvik chooses *free verse poetry* to express himself. His videos reach over 40 million people every month. He's the author of the National Bestselling poetry collection, *I Don't Love You Anymore*, that he initially self-published and has recently been acquired by Penguin Random India, along with his first poetry collection, *Warmth*.

Brevity over Literary Labyrinth

Rithvik began the event by prefacing to the crowd why he writes in a free verse. "I opt to craft my poetry in a manner that resonates with a wide audience, rather than catering solely to a specific group," says Rithvik. The readership of his poems is mostly young adults, teenagers and youth, who are not on their way to college. His poetry speaks to this age group, who is for the first time experiencing intense emotions today with zero figures.

He keeps his content short because today's youth lack the attention span to read a book but still deserves to have their sentiments acknowledged and their experiences validated. Rithvik helps challenge the notion that poetry, that uses simple colloquial language and brevity to reach its audience, is without literary merit or that such poetry can never really be 'good.'

Power of Poetry

Reflecting on his publishing journey, he recalled writing his first book just at 15, read only by his mother and sister. Despite his sizable Instagram following of 2 lakh, his first works did not sell. Taking a break, he returned two years later with a revised version. His subsequent book, *"I Don't Love You Anymore"*, defied expectations, selling over 25,000 copies in 10 days. This success highlighted the necessity of 'patience' in the writing world.

Social Media Struggles

But, addressing the significance of writers' online presence in the realm of social media, he emphasized the need to consistently engage with the internet to maintain reach. "To ensure the reach stays up, one needs to show up on the internet every single day," he stressed, adding humorously, "It takes a lot of work to build an online presence, when you don't know how to dance." He highlighted the importance of tailoring content for clarity and understanding, noting that brevity is key to conveying messages effectively online. "To make someone pause, watch, and reflect is a huge task," he concluded, underscoring the challenges and rewards of engaging with online audiences.

Patience in Writing

Reflecting on his publishing journey, he recalled writing his first book just at 15, read only by his mother and sister. Despite his sizable Instagram following of 2 lakh, his first works did not sell. Taking a break, he returned two years later with a revised version. His subsequent book, *"I Don't Love You Anymore"*, defied expectations, selling over 25,000 copies in 10 days. This success highlighted the necessity of 'patience' in the writing world.

Poetry in Writing

Reflecting on his publishing journey, he recalled writing his first book just at 15, read only by his mother and sister. Despite his sizable Instagram following of 2 lakh, his first works did not sell. Taking a break, he returned two years later with a revised version. His subsequent book, *"I Don't Love You Anymore"*, defied expectations, selling over 25,000 copies in 10 days. This success highlighted the necessity of 'patience' in the writing world.

Reflecting on his publishing journey,

he recalled writing his first book just at 15, read only by his mother and sister. Despite his sizable Instagram following of 2 lakh, his first works did not sell. Taking a break, he returned two years later with a revised version. His subsequent book, *"I Don't Love You Anymore"*, defied expectations, selling over 25,000 copies in 10 days. This success highlighted the necessity of 'patience' in the writing world.

संक्षिप्त

वरुण कुमार की पीएचडी की उपाधि

मनोहरपुर, (निसं)। रा. रा.मा.वि.

हुएपुर, शहरुपर में आयोग्यान्

(भूगोल) पद

पर सेवात्

शिक्षक वरुण

कुमार को

जयज्ञान विश्वविद्यालय,

जयपुर के

भूगोल विभाग

द्वारा की उपाधि

प्रदान की गयी

है। इन्हें यह

उपाधि पर्यावरण अध्ययन की समस्या

पर शोध करने बाबत दी गयी है।

वरुण कुमार ने शोध कार्य

डॉ. राजबाला रामावल के कुशल

निर्देशन में पूर्ण किया है।

सरपंच नीता कंवर

निवाई, (निसं)। अनर्तांश्चीय

समरसता में द्वारा प्रथम उपराष्ट्रपति

नेपाल व्यायमुर्ति

परमानन्द ज्ञा के

सानिध्य में

थिम्फू भूतान में

18 से 21 जून

तक जी-22

समरसता

सांस्कृतिक

सम्बन्ध

नीता कंवर

सम्बन्धन का

भव्य आयोजन भूतान के राष्ट्रबज़ विद्यालय की

अध्यक्षता में आयोजित किया जाएगा।

समारोह में जी-22 राष्ट्र भारत, नेपाल,

भूतान, अफगानिस्तान, अज़रबैजान,

एपोला, अंडमान-निकोबार, और शिया,

पिनलौण्ड, तुर्कियाँ, इरानी, इराक,

ईराइल, मैक्डोनिया, मोरक्को,

नीदरलैण्ड, नाईजीरिया, नायीज़ीयन,

रोमानिया, यात्यल डेनिस, श्रीलंका

मालदीव के प्रतिनिधियों को आमंत्रित

किया है। सम्मेलन में भूतान के प्रबुद्ध

व्यविधियों के सानिध्य में नटवाटा

सरपंच नीता कंवर का समरसता रत्न अवार्ड से अधिकारी किया जाएगा।

सम्मेलन में ग्राम पंचायत नटवाटा की

सरपंच चार्चा वंशीष्ठ सिंद्धान का

प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे।

पांच घंटे बंद रहेगी

विद्युत आपूर्ति

चाक्सु, (निसं)। कस्बे समेत

मूँदिय, स्वामी का बास, जीवनपुरा,

जयासेहुपुरा, तिरिया,

गिरधारालपुरा, खुटिया, राघवपुरा,

जीवांगी, मोरपुरा, जयप्रकाशपुरा,

निमोड़िया, अकोड़िया, भाद्रबास,

शीतला माता व आसपास की

फैक्ट्रीयों में रविवार को सुबह 11 से

शाम 4 बजे तक विधायिक

विधायिका के सहायक

अधिकारी राम अवतार बेरवा ने बताया

कि न्यायालय अंतिरिक्त स्थिति

न्यायालय एवं महानगर मजिस्ट्रेट

चाक्सु से प्रसरण से युग्म रही 33 की

लाइन चाक्सु व राघवालपुरा को

शिप्पट करने का कार्य किया जाएगा।

जिसके कारण 33 की लाइन

चाक्सु का शटडाउन रहेगा। इससे

33/11 की जीवी जीएसएस चाक्सु व

जीएसएस से निकलने वाले सभी

फोड़ों की निपुण सुबह 11 से शाम

4 बजे तक बाधित रहेगी।

पटवारी को उपखंड

मुख्यालय भेजा

दूदू, (निसं)। जिला कलेक्टर एवं

पटवारी के द्वारा परिवारी से 25 लाख

रुपय की रिस्त नारोग के प्रकारण में

अतिरिक्त जिला कलेक्टर गोपाल

परिवार ने एसीबी से दर्ज मार्मान की

प्रति मिलने के बाबत चार्कर

पटवारी हंसराज को निर्निवार कर

उपखंड मुख्यालय मोजमावाद में लगा

दिया। पटवार ने बताया कि गत 26

अप्रैल से एसीबी का प्रतिवेदन कर

कलेक्टर हंसराज द्वाका पटवारी

हंसराज के बिलाफ एफएसी अर दर्ज

कर पूछताछ की। 6 दिनों बाद एसीबी

से कापी मिलने से पर कार्कर

पटवारी हंसराज को निर्निवार कर

दिया गया। एसीबी द्वारा प्रकारण की

जाची की जा रही है।

कुंए में गिरने से

वृद्धा की मौत

मालपुरा, (निसं)। पचेवर थाना क्षेत्र

के हनुतिया गांव में शिनिवार को कुंए

में गिरने से खोड़ महिला की मौत हो

गई। जानकारी में सामने आया कि

हनुतिया निवासी 20 वर्षीय वृद्ध

महिला मनपुरा द्वारा जीवा जो कि

शिनिवार को कुंए से

मौत हो गई।

धमाकी की आवाज नासपास के खेतों

के खेतों से दूरी की ओर से

घोटाला की ओर से

घ

